

मिलकर करें मिलान

नीचे स्तंभ 1 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं, उनसे संबंधित अर्थ वाली स्तंभ 2 की पंक्तियों से उनका मिलान कीजिए-

	स्तंभ 1		स्तंभ 2
1.	जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै। खान पान सन्मान राग रंग मनहिं न भावै।।	1.	जो कार्य बिना विचार किए किया जाता है, वह लंबे समय तक मन में खटकता रहता है और उसकी पीड़ा से छुटक. ारा पाना मुश्किल होता है।
2.	कह गिरिधर कविराय दुख कछु टरत न टारे। खटकत है जिय माहि कियो जो बिना बिचारे।।	2.	बिना विचारे किए गए कार्य के कारण मन अशांत रहता है। अच्छा खान-पान, सम्मान या जीवन की खुशियाँ भी उस व्यक्ति को सुख नहीं दे पातीं।
3.	ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै। दुर्जन हँसै न कोइ चित में खता न पावै।।	3.	अपने मन को इस बात पर विश्वास करना सिखाओ कि भविष्य की खुशी को समझते हुए अतीत के दुखों को भुलाकर आगे बढ़ना चाहिए।
4.	कह गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती। आगे को सुख होइ समुझि बीती सो बीती।।	4.	ऐसे कार्य कीजिए कि किसी बुरे व्यक्ति को हँसने का मौ. का न मिले और मन में किसी प्रकार का दोष या अपराध बोध न हो।